

8-महाकाल का प्रतिभाओं को आमंत्रण

अध्याय 1: सर्वोपरि उपलब्धि—प्रतिभा

1. प्रश्न: प्रतिभा का परिष्कार क्यों आवश्यक है और इसमें मनुष्य का अपना क्या योगदान होता है?
2. उत्तर: व्यक्तित्व का परिष्कार ही प्रतिभा का परिष्कार है। प्रतिभा के परिष्कार में मनुष्य का अपना संकल्प, अपना समय और अपना पुरुषार्थ ही काम आता है। अन्य सुविधाएँ तो दूसरों की कृपा से मिल सकती हैं, लेकिन प्रतिभा को निखारने के लिए निज का प्रयास अत्यंत महत्वपूर्ण है। गीता में कहा गया है कि मनुष्य स्वयं ही अपना शत्रु और स्वयं ही अपना मित्र है, इसलिए उसे अपने को उठाना चाहिए, गिराना नहीं।
3. प्रश्न: मनुष्य अन्य प्राणियों से किस प्रकार श्रेष्ठ है और उसकी यह विशिष्टता क्या कहलाती है?
4. उत्तर: मनुष्य ने सृष्टि के सभी प्राणियों की तुलना में वरिष्ठता प्राप्त की है, उसकी शरीर-संरचना और मानसिक-मस्तिष्कीय विलक्षणता के कारण। वह अपने समुदाय और वातावरण को शानदार बना सकने की संभावनाएँ रखता है। यह दिव्य विभूति प्रतिभा कहलाती है, जिसे प्रयत्नपूर्वक उभारा जाता है। शारीरिक रूप से कमजोर होने पर भी, मनुष्य अपनी विशिष्ट चतुरता और कुशलता के सहारे सभी प्राणियों से श्रेष्ठ सिद्ध होता है।
5. प्रश्न: प्रतिभा की पहचान क्या है और प्रतिभाशाली व्यक्ति समाज में क्या भूमिका निभाते हैं?
6. उत्तर: प्रतिभा एक दैवी स्तर की विद्युत चेतना है, जो मनुष्य के व्यक्तित्व और कर्तृत्व में असाधारण उत्कृष्टता भर देती है। यह व्यक्ति को आश्चर्यजनक सफलताएँ दिलाती है और दूसरों को भी अभ्युदय के मार्ग पर ले जाने वाला मार्गदर्शन प्रदान करती है। प्रतिभाशाली व्यक्ति तारागणों के बीच चंद्रमा की तरह चमकते हैं, जो स्वयं सुन्दर होते हैं और दूसरों को भी शोभा-सुन्दरता से जगमगा देते हैं। वे ऊर्जा और आभा के उद्गम होते हैं और गिरों को उठाने तथा डूबतों को उबारने में सक्षम होते हैं।
7. प्रश्न: प्रतिभा के अभाव में व्यक्ति और समाज की क्या स्थिति हो जाती है?
8. उत्तर: प्रतिभा के अभाव में व्यक्ति को सही मार्ग ढूँढने का अवसर नहीं मिलता। वह अशक्त परावलम्बियों जैसा जीवन जीता है, कठिनाइयों में घुटन महसूस करता और आँसू बहाकर रह जाता है। समाज में ऐसे लोग भूखे-नंगे और तिरस्कृत जीवन जीते हैं। दुर्व्यसन उन्हें खींचते-घसीटते रहते हैं, और वे अपने व समाज के लिए एक समस्या बने रहते हैं। प्रतिभा रहित समुदाय को धरती पर लदे भार जैसा आँका जाता है।
9. प्रश्न: मनुष्य ने किस प्रकार आदिकाल के असुन्दर संसार को आज के विकसित रूप में बदला है?
10. उत्तर: आदिकाल में मनुष्य वनमानुषों की तरह भूखा-नंगा फिरता था और ऋतु-प्रभावों से जूझता था। तब संसार में खाई-खन्दक, ऊसर वन और अनगढ़ जीव-जन्तु थे, आहार और निवास की सुविधाएँ भी नहीं थीं। आज का सुविधा-सम्पन्न संसार मनुष्य की प्रतिभा विकसित होने के साथ-साथ ही विस्तारित हुआ है। यह बाजारों, उद्योगों, विज्ञान और शिक्षा से भरा-पूरा है, जिसका श्रेय प्रतिभा-परिष्कृत प्रतिभा को ही जाता है, जो सर्वतोमुखी प्रगति का आधार है।
11. प्रश्न: सम्पदा, बुद्धिमत्ता से ऊपर प्रतिभा को क्यों आँका गया है?
12. उत्तर: इन दिनों सम्पदा और बुद्धिमत्ता को महत्व दिया जाता है, परन्तु परिष्कृत प्रतिभा का चमत्कार दार्शनिकों, शासकों, कलाकारों और वैज्ञानिकों में ही दिखता है। साहसिकता, दूरदर्शिता और

विवेकशीलता प्रतिभा के ही रूप हैं। प्रतिभा का अर्जन ही सच्चे अर्थों में वैभव है, जिसे पाकर व्यक्ति गौरव अनुभव करता है और याचक न रहकर दानवीर बन जाता है। विज्ञान उसका अनुयायी है और सम्पदा उसकी चेरी है, जो श्रेय और सम्मान को खींच लाती है।

13. प्रश्न: प्रतिभा का दुरुपयोग किस प्रकार किया जा सकता है और सदुपयोग क्यों आवश्यक है?
14. उत्तर: यदि परिष्कृत प्रतिभा का अभाव हो, तो अन्य उपलब्धियों का प्रायः दुरुपयोग ही होता है। शरीर बल से सम्पन्न लोग आततायी या आतंकवादी बन सकते हैं। सम्पदावान विलास, दुर्व्यसन और अहंकार प्रदर्शन में धन व्यय करते हैं। बड़ी हुई शिक्षा या चतुरता बड़े-बड़े प्रपंच रच सकती है। प्रतिभा ही वह क्षमता है जो वैभव को उपार्जित करती है और उसके सदुपयोग के लिए उच्चस्तरीय सुझाव, संकल्प और साहस प्रदान करती है। इसलिए इसका सदुपयोग अत्यंत आवश्यक है।

अध्याय 2: प्रतिभा से बढ़कर और कोई समर्थता है नहीं

1. प्रश्न: प्रतिभा की क्या परिभाषा दी गई है और यह सत्य से किस प्रकार अधिक शक्तिशाली है?
2. उत्तर: प्रतिभा को आदर्शवादी प्रयोजन, सुनियोजन, व्यवस्था और साहसभरी पुरुषार्थ-परायणता का गुलदस्ता कहा गया है। यह सत्य से भी बढ़कर है; जहाँ सत्य में हजार हाथियों का बल माना जाता है, वहीं प्रतिभाभरी जागरूकता-साहसिकता के साथ मिलकर यह लाख ऐरावतों जैसी शक्ति बन सकती है। इसे मनुष्य जीवन की सबसे बड़ी शक्ति-सम्पन्नता और सौभाग्यशाली उपलब्धि कहा गया है।
3. प्रश्न: आतंकवाद या दादागीरी को प्रतिभा क्यों नहीं माना जा सकता?
4. उत्तर: दूसरों पर हावी होकर गलत काम कराने के लिए आतंक का प्रदर्शन या दादागीरी करना प्रतिभा नहीं है। ऐसे लोगों को दैत्य या दानव कहा जाता है, प्रतिभावान नहीं। वे उत्पीड़ित लोगों से शाप और घृणा प्राप्त करते हैं। ऐसे प्रतिगामी, तथाकथित प्रगतिशील व्यक्तियों का कार्य-क्षेत्र केवल विनाश तक सीमित रह जाता है और उनका अंत कुरुरमुत्तों जैसा होता है। प्रतिभा तो उत्कृष्टता और साहसिकता का नाम है, जो कस्तूरी की तरह महकती है।
5. प्रश्न: गाँधीजी के व्यक्तित्व में ऐसी क्या जादुई शक्ति थी, जिससे प्रतिभाएँ निखरती थीं?
6. उत्तर: गाँधीजी के परामर्श और सान्निध्य से अनेक प्रतिभाएँ निखरीं और कार्यक्षेत्र में उतरीं। इस समूह ने देश के वातावरण में शौर्य और साहस के प्राण फूँक दिए, जिससे देश की स्वतंत्रता जैसी बड़ी उपलब्धि संभव हुई। ब्रिटिश प्रधानमंत्री चर्चिल भी भारत के वायसराय को गाँधीजी से न मिलने की सलाह देते थे, क्योंकि उनके जादुई प्रभाव में आकर लोग उन्हीं के हो जाते थे। यह उनकी अद्भुत प्रभावशीलता थी।
7. प्रश्न: महात्मा बुद्ध ने अंगुलिमाल और अम्बपाली जैसे लोगों को कैसे परिवर्तित किया?
8. उत्तर: अंगुलिमाल नामक महादस्यु, जो बुद्ध को मारना चाहता था, बुद्ध के सामने पहुँचते ही पानी-पानी हो गया। उसने तलवार फेंक दी और बुद्ध का शिष्य बनकर अपना शेष जीवन धर्म के लिए समर्पित कर दिया। इसी प्रकार, अम्बपाली नामक वेश्या भी बुद्ध के सामने आते ही अपने कुचक्र को त्यागकर उनके चरणों में गिर गई और उनके आशीर्वाद से उसका उत्तरार्ध लोकमंगल के लिए समर्पित हो गया। यह बुद्ध की प्रतिभा की जादुई शक्ति थी।
9. प्रश्न: भारतीय इतिहास के कुछ ऐसे उदाहरण दीजिए जहाँ व्यक्तियों ने अपनी प्रतिभा से बड़े कार्य किए हों?

10. **उत्तर:** भारतीय इतिहास में अनेक प्रतिभावान हुए हैं। सरदार पटेल ने राजाओं को भारत-गणतंत्र में मिलाया। राणा प्रताप, छत्रपति शिवाजी और रानी लक्ष्मीबाई ने अल्प साधनों से बड़े पराक्रम दिखाए। चाणक्य ने चंद्रगुप्त को महान सम्राट बनाया। नेपोलियन ने असंभव को संभव किया। अब्राहम लिंकन और जॉर्ज वाशिंगटन जैसे नेताओं ने विपरीत परिस्थितियों में भी सफलता पाई। विनोबा भावे का भूदान आंदोलन और जयप्रकाश नारायण की समग्र क्रांति भी प्रतिभा के ही उदाहरण हैं।
11. **प्रश्न:** धनवानों और साहित्यकारों की उन्नति में प्रतिभा का क्या योगदान रहा है?
12. **उत्तर:** धनवानों में हेनरी फोर्ड, रॉक फेलर, अल्फ्रेड नोबल, टाटा, बिड़ला जैसे लोग शुरुआत में साधनहीन थे। उनकी उन्नति में सूझ-बूझ, कठोर श्रमशीलता, एकाग्रता और लक्ष्य के प्रति सघन तत्परता मुख्य सहायक रही। इसी प्रकार, भगवती प्रसाद वाजपेयी, बालकृष्ण शर्मा 'नवीन', रामवृक्ष बेनीपुरी जैसे साहित्यकार, जो घोर विपन्नता में पले, और गोर्की जैसे व्यक्ति, जो कूड़ा बीनते थे, अपनी प्रतिभा के बल पर विश्वविख्यात हुए। यह सब प्रतिभा का ही चमत्कार है।

अध्याय 3: परिष्कृत प्रतिभा, एक दैवी अनुदान-वरदान

- प्रश्न:** परिष्कृत प्रतिभा को दैवी अनुदान क्यों कहा गया है?
- उत्तर:** परिष्कृत प्रतिभा को दैवी अनुदान इसलिए कहा गया है क्योंकि जिस प्रकार सेना अपने सैनिकों को युद्ध मोर्चों पर आवश्यक सुविधाएँ देती है, उसी प्रकार युग परिवर्तन करने वाली सत्ता ने भी नव सृजन के लिए अग्रगामी आदर्शवादियों की व्यवस्था की है। जो ईश्वर का काम करते हैं, उन्हें आदरपूर्वक बुलाया जाता है और अभीष्ट साधनों का उपहार भी दिया जाता है। भगवान ने काय-कलेवर के बाद परिष्कृत प्रतिभा को दूसरा वरदान बताया है, जिसके सहारे कोई महामानव बनता है।
- प्रश्न:** ईश्वर अपने काम करने वालों को किस प्रकार सहायता और सामर्थ्य प्रदान करता है?
- उत्तर:** ईश्वर अपने काम करने वालों को आदरपूर्वक बुलाता है और उन्हें अभीष्ट साधनों का उपहार देता है। हनुमान को सीता की खोज के लिए समुद्र लौंघने, लंका जलाने जैसी असाधारण शक्ति मिली। विभीषण को लंका का सम्राट बनने का सुयोग मिला और सुग्रीव ने अपना राज्य वापस पाया। कुंती को उत्कृष्ट पुत्र रत्न मिले और सूर-तुलसी ने अनंत कीर्ति पाई। भगीरथ, गाँधी, बुद्ध जैसे परमार्थी लोगों को भी इसी कारण समर्थता मिली।
- प्रश्न:** दैवी अनुदान प्राप्त करने के लिए क्या पात्रता आवश्यक है?
- उत्तर:** दैवी अनुदान प्राप्त करने के लिए पात्रता आवश्यक है। यह हवा-पानी की तरह मुफ्त नहीं मिलता; जौहरी की दुकान की वस्तु की तरह इसका मूल्य चुकाना पड़ता है। सुदामा को द्वारिका तब मिली जब उन्होंने विश्वविद्यालय चलाने का विश्वास दिलाया। शिवाजी को भवानी तलवार और अर्जुन को गाण्डीव धनुष उनकी योग्यता और उद्देश्य की जाँच के बाद ही मिले थे। भस्मासुर जैसे दुरुपयोग से बचने के लिए, यह सिद्ध करना होगा कि प्राप्त अनुदान का उच्चस्तरीय प्रयोजनों में ही उपयोग किया जाएगा।
- प्रश्न:** समाज की बड़ी समस्याओं को हल करने और युग परिवर्तन के लिए किसकी आवश्यकता है?
- उत्तर:** समाज की सुविस्तृत और उलझन भरी समस्याओं को सुलझाने के लिए साहसी और मेधावीजनों की आवश्यकता है, जिन्हें प्रतिभावान भी कहा जाता है। युग परिवर्तन जैसे महान प्रयोजनों के लिए ऐसे व्यक्ति चाहिए, जो गौरवभरी गरिमा का परिचय दे सकें। संचित अनाचारों के संभावित विस्फोट और

प्रदूषण जैसी महाप्रलयकारी स्थितियों को रोकने के लिए सशक्त अवरोधक चाहिए, जो असाधारण लोगों का काम है। नवयुग के अवतरण के लिए भी ऐसे ही मनस्वी साथी-सहयोगियों की आवश्यकता है।

9. प्रश्न: असंभव को संभव बनाने के कुछ ऐतिहासिक उदाहरण दीजिए।

10. उत्तर: नेपोलियन ने आल्प्स पर्वत को लाँघने की योजना बनाई, यह कहकर कि "असंभव शब्द मूर्खों के कोश में लिखा मिलता है"। कोलम्बस ने अमेरिका की खोज की। टिटहरी ने समुद्र को पाटकर अपने अंडे वापस पाने का संकल्प किया, तो अगस्त्य मुनि ने समुद्र पी डाला। फरहाद ने पहाड़ काटकर 32 मील लंबी नहर निकाली। ये सभी उदाहरण दर्शाते हैं कि दृढ़ इच्छाशक्ति और प्रतिभा के बल पर असंभव को भी संभव बनाया जा सकता है।

अध्याय 4: प्रचण्ड मनोबल की प्रतिभा में परिणति

1. प्रश्न: 'ईश्वर उन्हीं की सहायता करता है, जो अपनी सहायता आप करते हैं' - इस उक्ति को रामायण के संदर्भ में समझाइए।

2. उत्तर: सीता हरण के बाद जब रावण को परास्त करने की बात आई, तो राम का निमंत्रण कई राजाओं ने अस्वीकार कर दिया था। तब 'जिन खोजा, तिन पाइयौ' उक्ति के अनुसार, रीछ-वानरों में से ऐसे मनस्वी निकले, जिन्होंने बड़े-से-बड़े जोखिम उठाने की तत्परता दिखाई। उन्होंने समुद्र पर सेतु का निर्माण किया। यह दर्शाता है कि जब व्यक्ति दृढ़ संकल्प से अपनी सहायता स्वयं करता है, तो ईश्वर भी प्रतिकूलताओं को हटाकर अनुकूलताएँ जुटा देता है।

3. प्रश्न: परिष्कृत प्रतिभा साधारण सहयोगियों की सहायता से भी बड़े काम कैसे सम्पन्न कर लेती है? उदाहरण सहित समझाइए।

4. उत्तर: परिष्कृत प्रतिभा दुर्बल सहयोगियों की सहायता से भी बड़े काम कर लेती है, क्योंकि यह उन्हें प्राण-चेतना से ओत-प्रोत कर देती है। राणा प्रताप के सैनिकों में अधिकांश पिछड़े आदिवासी थे। रानी लक्ष्मीबाई ने घर में रहने वाली महिलाओं को प्रोत्साहित कर युद्ध क्षेत्र में खड़ा किया, और डाकू सागर सिंह को बंदी बनाकर अपनी सेना में शामिल कर लिया। इसी प्रकार, चाणक्य ने चंद्रगुप्त में प्राण फूँके, कृष्ण ने अर्जुन को प्रेरित किया, और रामकृष्ण परमहंस ने विवेकानंद को विश्वभर में भारतीय संस्कृति का संदेशवाहक बनाया।

5. प्रश्न: प्रतिभा के परिष्कार के लिए निरंतर क्या प्रयास करने पड़ते हैं?

6. उत्तर: प्रतिभा यकायक परिष्कृत नहीं बन जाती; इसके लिए औजारों की तरह निरंतर धार तेज करने की आवश्यकता होती है। पहलवानों की तरह मुद्दतों अभ्यास करना पड़ता है। व्यक्ति को आए दिन अवांछनीयताओं से जूझना और सुसंस्कारी आदर्शवादिता के अभिवर्धन का प्रयास जारी रखना पड़ता है। यह समाज सेवा और निजी जीवन में आत्मनिरीक्षण, आत्मसमीक्षा, आत्मसुधार और आत्मविकास के माध्यम से संभव है, जिसमें अपनी दिनचर्या में ही प्रगतिशीलता का अभ्यास करना होता है।

7. प्रश्न: पात्रता का विकास क्यों आवश्यक है और यह सफलता कैसे दिलाती है?

8. उत्तर: दूसरों की सहायता प्राप्त करने के लिए अपनी पात्रता को विकसित करना असाधारण प्रयत्न मांगता है। पात्रता ही प्रकारांतर से सफलता जैसे पुरस्कार साथ लेकर लौटती है। जिस प्रकार वर्षा उतनी ही मिलती है जितना बर्तन का आकार हो, उसी प्रकार व्यक्ति अपनी योग्यता से ही उपलब्धियाँ प्राप्त करता है। छात्रों को अगली कक्षा में चढ़ने या पुरस्कार जीतने का अवसर उनकी परिश्रमपूर्वक बढी

हुई योग्यता से मिलता है, न कि किसी की कृपा से। देवताओं का अनुग्रह भी तपश्चर्या की प्रखरता अपनाने वालों को ही मिलता है।

9. प्रश्न: प्रबल इच्छाशक्ति और मनोबल से व्यक्ति किस प्रकार असाधारण कार्य कर सकता है? उदाहरण दीजिए।

10. उत्तर: प्रबल इच्छाशक्ति और मनोबल से व्यक्ति असाधारण कार्य कर सकता है। भीष्म ने अपनी मृत्यु को धमकाया। सावित्री ने यमराज से सत्यवान के प्राण वापस दिलवाए। राणा सांगा ने अस्सी घावों के बावजूद युद्ध जारी रखा। विश्वविजयी पहलवान सैंडो ने अपनी दुर्बल काया को मनोबल से विश्वविजयी बनाया। हिन्दकेसरी चन्दगीराम ने भी अपनी खोई सेहत को मनोबल से वापस पाया। एक कैंसर पीड़ित महिला ने दूसरों की सहायता के लिए अस्पताल बनवाया और स्वयं ठीक हो गई। वाल्टेयर ने बीमार होते हुए भी महत्वपूर्ण ग्रंथ रचे, और कालिदास जैसे मंदबुद्धि भी नए सिरे से विद्याध्ययन कर मूर्धन्य विद्वान बने। यह सब प्रचण्ड मनोबल की प्रतिभा का ही परिणाम है।

अध्याय 5: आगे बढ़ें और लक्ष्य तक पहुँचें

1. प्रश्न: प्रतिभा को अध्यात्म की भाषा में क्या कहते हैं और इसकी क्या क्षमताएँ हैं?

2. उत्तर: अध्यात्म की भाषा में प्रतिभा को प्राणाग्नि और तेजस्वी मानसिकता कहते हैं। यह शरीर में जीवनचर्या को सुसंचालित रखने वाली जैव विद्युत है। जब मन में शौर्य, पराक्रम, साहस और विश्वास के रूप में इसका संतोषजनक अनुपात होता है, तो यह प्रसुप्त क्षमताओं को जगाती है। प्रतिभा कठिनाइयों से जूझकर उन्हें परास्त कर सकती है और महत्वपूर्ण सृजन-प्रयोजनों को कल्पना से सफलता तक पहुँचाने की सुनिश्चित क्षमता रखती है। यह असाधारण स्तर के चमत्कार, शाप-वरदान दिखा सकती है।

3. प्रश्न: प्रतिभा का अभाव व्यक्ति को किस प्रकार प्रभावित करता है?

4. उत्तर: प्रतिभा के अभाव में व्यक्ति को कायर, अकर्मण्य, डरपोक, आलसी और आत्महीनता की ग्रन्थियों से ग्रसित माना जाता है। ऐसे लोग संकोची, परावलम्बी होते हैं और मन ही मन घुटते रहते हैं। वे बड़ी-बड़ी आकांक्षाएँ तो सँजोते हैं, लेकिन उनके लिए आवश्यक लगन, दृढ़ता, संकल्प और अनवरत प्रयत्न जुटा नहीं पाते। इसका परिणाम केवल असफलताजन्य निराशा और भाग्य को दोष देना होता है।

5. प्रश्न: व्यक्तित्व का परिष्कार किस प्रकार प्रतिभा परिष्कार से जुड़ा है?

6. उत्तर: व्यक्तित्व का परिष्कार ही प्रतिभा का परिष्कार है। जिस प्रकार धातु कण खदान के चुंबकीय आकर्षण से खिंचकर उसका भार बढ़ाते हैं, उसी प्रकार व्यक्तित्ववान व्यक्ति अनेकों का स्नेह, सहयोग और परामर्श प्राप्त करते हैं। इसमें अपना संकल्प, अपना समय और अपना पुरुषार्थ ही काम आता है। गीताकार ने कहा है कि मनुष्य स्वयं ही अपना शत्रु और स्वयं ही अपना मित्र है, इसलिए उसे अपने को उठाना चाहिए, गिराना नहीं।

7. प्रश्न: भीतर की चेतना की गतिशीलता व्यक्ति को कैसे उन्नति के शिखर तक पहुँचाती है? उदाहरण दीजिए।

8. उत्तर: बाहरी दिखावे से अधिक भीतर की चेतना की गतिशीलता व्यक्ति को उन्नति के शिखर तक

पहुँचाती है। जिस प्रकार पृथ्वी स्थिर दिखती है पर तेजी से घूमती है, उसी प्रकार कुछ व्यक्ति सामान्य जीवन जीते हुए भी अपनी भीतर की सामर्थ्य से चमत्कार दिखाते हैं। द्वितीय विश्व युद्ध में चर्चिल के प्रचण्ड आत्मविश्वास ने मित्र राष्ट्रों को युद्ध जारी रखने के लिए प्रेरित किया। मनुष्य अपनी इसी भीतर की सामर्थ्य के कारण सृष्टि का मुकुटमणि बन चुका है और अंतरिक्ष पर भी आधिपत्य जमा रहा है।

9. प्रश्न: मनुष्य अपनी सशक्त प्रतिभा को कैसे प्रकट कर सकता है और इसका क्या महत्व है?

10. उत्तर: लकड़ी का लट्ठा तभी तक डूबा रहता है जब तक उस पर भार हो, और अंगारा राख हटने पर चमक उठता है। मनुष्य अपने निर्माता की तरह सामर्थ्यवान है और अपनी सशक्त प्रतिभा को बिना किसी अहसान के प्रकट कर सकता है। इसके लिए केवल प्रबल इच्छाशक्ति और उत्कंठा की आवश्यकता है। मनुष्य की क्षमता देवताओं या दानवों से कम नहीं है; वह घिनौने कार्य करने पर प्रेत-पिशाचों से भी भयंकर दिख सकता है, और श्रेष्ठता उभारने पर देवता भी उसे नमन करते हैं। भगवान भी मनुष्य के कलेवर में बार-बार अवतार धारण करते हैं।

11. प्रश्न: व्यक्ति को किन लोगों के सम्पर्क में रहना चाहिए और क्यों?

12. उत्तर: मनुष्य संबद्ध वातावरण से प्रभावित होता है। बुरे लोगों के बीच रहने और बुराई में रुचि लेने वाला व्यक्ति पतन के गर्त में गिरता जाता है। इसके विपरीत, मनीषियों, चरित्रवानों और सत्साहसी लोगों के सम्पर्क में रहने पर उनका प्रभाव-अनुदान सहज ही खिंचता चला आता है और व्यक्ति को उठाने में असाधारण सहायता करता है। इसलिए हीनता और निकृष्टता से भरे वातावरण से बचना और सज्जनता का सान्निध्य तथा स्वाध्याय व सत्संग का सहारा लेना उचित है।

13. प्रश्न: आत्म-विश्वास और आत्म-निरीक्षण का क्या महत्व है?

14. उत्तर: आत्म-विश्वास एक बड़ी चीज है, जो रस्सी को साँप और साँप को रस्सी बना सकती है। दूसरों का साथ न मिले, तो भी मनुष्य अपने चिंतन, चरित्र और व्यवहार को अपनी इच्छानुसार सुधार सकता है। संकल्प-शक्ति चट्टान को भी चटका देती है और साधनों को आकर्षित करती है। आत्म-निरीक्षण से अपनी छिपी हुई खोटें दिखती हैं, जिन्हें खोजकर निरस्त करने से व्यक्ति सुसंस्कृत बनता है। अपनी विशिष्टताओं को सींचने से व्यक्तित्व अधिक प्रगतिशील और प्रतिभासम्पन्न बनता है।